समाजवाद

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक – प्यारेलाल अंक २५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २० जुलाअी, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

फ़ौजें क्यों ?

तालीमके मामलेमें गहरी रुचि लेनेवाले और सच्चे दिलसे लड़ाअीसे नफ़रत करनेवाले अेक अंग्रेज़ दोस्तने कुछ दिनों पहले मुझसे कहा था — "हिन्दुस्तानका बँटवारा हो जानेसे मुझे बहुत दुःख हुआ है, मगर मेरा ख़याल है कि अुसे टाला नहीं जा सकता था। यह मेरी समझमें ही नहीं आ सकता कि किसी देशको फ़ौजकी ज़रूरत क्यों होती है? हम बड़ी आसानीसे मानव-अधिकारों और विश्व-शांतिकी बातें करते हैं; मगर जब तक किसी देशमें ज़मीनकी, हवाअी और समुद्री फ़ौजें हैं, तब तक दुनियामें शान्ति कैसे क़ायम हो सकती है? किसी देशमें क़ानून और व्यवस्था बनाये रखनेके लिअे अुचित तादादमें पुलिस रखकर अुससे काम क्यों नहीं चलाया जा सकता और सारी फ़ौजोंको तोड़ा क्यों नहीं जा सकता? शुरू-शुरूमें अेक अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस रखना ज़रूरी हो सकता है। मुझे अुम्मीद थी कि आपके नेताकी रहनुमाअीमें, हिन्दुस्तान अिस मामलेमें सारी दुनियाका नेतृत्व करेगा। मगर जिसे मैं हमेशा ही हिन्दुस्तानका लक्ष्य समझता रहा हूँ अुसे फ़िरक़ेवाराना झगड़ोंने अँधेरेमें ढकेल दिया है; गो कि मुझे अुम्मीद है कि यह हालत कुछ ही दिनों टिकनेवाली है। अगर आपको हथियारों पर बेहद रुपया खर्च करना पड़ा, तो तालीमका क्या होगा? वही पुरानी शिकायत फिर बनी रहेगी और आपकी बुनियादी ज़रूरतें पूरी करनेके लिअे आपके पास अेक पैसा भी नहीं बचेगा।"

शायद हिन्दुस्तानके बँटवारेके बाद फ़ौजके बँटवारेकी ही बात अैसी है जिसने गांधीजीके दिलको अितनी निराशासे भर दिया है। बेहद दुखी होकर अुन्होंने प्रार्थना-सभामें अिकट्ठा हुअी जनताके सामने अुस भयंकर लड़ाअीका चित्र खींचा, जिसमें अेक तरफ़ हिन्दू फ़ौज है और दूसरी तरफ़ मुस्लिम फ़ौज, और वे दोनों अेक दूसरेका सर्वनाश करनेपर तुली हुअी हैं। मानों अभी तक लगातार होनेवाली हिंसाका पागलपन अिन्सानके दिमागको आग, लूटमार, खून और बलात्कारसे मोड़नेके लिअे काफ़ी नहीं है!

अिन अंग्रेज़ दोस्तने जिन अंदेशोंका ज़िक्र किया है, वे ठीक हैं। अगर हिन्दुस्तान जैसे ग़रीब मुल्कको अेक ज़बरदस्त फ़ौज रखनेके लिअे लाचार होना पड़ा, तो वह राष्ट्र-निर्माणके कामोंपर खुले हाथों रुपया खर्च नहीं कर सकेगा और अुसकी आखिरी हालत शुरूआतकी हालतसे ज़्यादा बुरी रहेगी।

कुछ अिण्डोनेशियन दोस्त गांधीजीसे मिलनेके लिअे आये थे। अुन्होंने पूछा कि अगर यूरोपके देश अिण्डोनेशियापर हमला करें, तो अुसका जवाब हमलेसे देनेके सिवा दूसरे किसी तरहसे अुन्हें रोकना कैसे मुमकिन है? यूरोप हमेशा ज़ोर-ज़बरदस्तीमें विश्वास करता रहा है, अिसलिअे अिण्डोनेशियाके दोस्तोंकी समझमें नहीं आता था कि कोअी भी मुल्क फ़ौजी ताक़तके बग़ैर अुनका सामना कैसे कर सकता है।

गांधीजीने बड़ी नम्रतासे अिस बातका विरोध करते हुअे कहा कि अैसा सवाल अहिंसाके बारेमें पूरी बेजानकारी ज़ाहिर करता है। "मैं आपसे अेक अुलट-सवाल पूछता हूँ। मान लीजिये कि ब्रिटेन, अमेरिका और रूसकी फ़ौजें आपके खिलाफ़ मिल जाती हैं और आपको अपना ग़ुलाम बनाना चाहती हैं। अुस वक़्त अुनका सामना करनेके लिअे आपको कितनी हिंसक शक्तिकी ज़रूरत पड़ेगी? मेरा खयाल है कि आप हिंसाके बलपर अुनका सामना नहीं कर सकते। हाँ, अगर पूरा अेशिया आपकी पीठपर हो, तो बात अलग है। फिर भी अगर यूरोपियनोंके जंगी हथियार आपसे ज़्यादा अच्छे हुअे, तो आपकी हार हो सकती है। मगर आप अुन्हें सिर्फ़ अहिंसाके ज़ोरसे रोक सकते हैं। तब चाहे आपका अेक अेक आदमी मारा जाय, फिर भी आपको कोअी जीत नहीं सकता।" गांधीजीने आगे कहा — "जो बात मैं पिछले दिनों कअी बार कह चुका हूँ, अुसे यहाँ फिर दोहराता हूँ कि हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी लड़ाअी सिर्फ़ निष्क्रिय प्रतिरोध रही है, जो कि कमज़ोरोंका हथियार है और सक्रिय सशस्त्र विरोध तक पहुँचनेकी अेक सीढ़ी है। अगर कांग्रेसने सचमुच अहिंसाको अपनाया होता, तो मौजूदा फ़िरक़ेवाराना झगड़े हो ही न पाते। दिलकी बहादुरी जिस्मकी बहादुरीसे बहुत बड़ी चीज़ है। अहिंसक अिण्डोनेशिया पूरबका नेतृत्व कर सकता है। यह अैसा पद है जिसे मैं चाहूँगा कि हिन्दुस्तान ग्रहण करे। मगर आज तो हिन्दुस्तानमें हिंसाकी अेक ज़बर्दस्त बाढ़ आ गअी है, जिसे खुद नुक़सान अुठाकर भी अहिंसाके ज़रिये रोकना हम सीखे नहीं हैं।" गांधीजीने यह कहते हुअे अपनी बात खत्म की कि "जब तक हम अपनेमें यह ताक़त पैदा नहीं करते, तब तक हिन्दुस्तानके बारेमें अितने बरसोंसे मैं जो अूँची आशाअें रखता आया हूँ, अुन्हें वह पूरी न कर सकेगा।"

नअी दिल्ली, १०–७–'४७
(अंग्रेजीसे)

अमृत कुँअर

टिप्पणियाँ

यूरोपका सवाल

अेक दिन डच राजदूत मि० विन्कलमैन गांधीजीसे मिलने आये। अुन्होंने गांधीजीसे कहा – "मैं राजनीतिज्ञ होनेके बजाय अेक दार्शनिक ही ज़्यादा हूँ। मैं जल्दी ही सिंगापुरके लिअे रवाना होनेवाला हूँ। मेरी जगह दूसरा आदमी लेगा। मुझे अैसे समय हिन्दुस्तान छोड़नेका बड़ा दुःख है, जब यहाँ अितनी महत्वपूर्ण घटनायें घट रही हैं। भगवान् आपको लम्बी ज़िन्दगी दे! अभी बहुत कुछ करना बाकी है।" अिसके बाद मि० विन्कलमैनने गांधीजीसे पूछा – "क्या आपके खयालमें अभी भी हिन्दुस्तानको बहुतसी मुसीबतोंसे गुजरना होगा?"

गांधीजीने जवाब दिया — "अगर मैं भविष्यके बारेमें कुछ कह सकूँ, तो मुझे लगता है कि हमारे देशमें शान्ति और अमन क़ायम हो, अिसके पहले हमें थोड़ी और मुसीबतें सहनी होंगी।"

मुलाकातीने कहा — "आप भगवानमें श्रद्धा रखनेवाले हैं। अगर आप यह महसूस करते हैं कि हिन्दुस्तान सही दिशामें जा रहा है, तो आपका मन शान्त होना चाहिये। आज यूरोप सही दिशामें नहीं जा रहा है। वह अिसीलिअे मुसीबतोंका शिकार है कि अुसने अपना अीसाअी धर्म छोड़ दिया है।"

गांधीजीने जवाब दिया — "आपका कहना ठीक है। बहुत समयसे यूरोपके बारेमें मेरा यही विश्वास रहा है।"

www.vinoba.in

मुलाकातीने पूछा — "यूरोपकी हालतके बारेमें आप क्या सोचते हैं?"

गांधीजीने कहा — " "मैं कुछ नहीं सोचता। वह मेरी ताक़तसे बाहरकी बात है। यूरोपका सवाल बड़ा पेचीदा है।"

"हाँ, वह सचमुच पेचीदा है" — मुलाकातीने मंजूर किया। अुन्होंने आगे कहा — "मैं १९३९में डॉ० मालनसे यूरोपमें मिला था। मैंने अुनसे यूरोपके बारेमें कअी सवाल किये थे। अुन्होंने कहा था — 'यूरोपके लिअे कोअी आशा नहीं। वह ज़रूर बरबाद होगा।' मैंने पूछा — 'क्यों?' अुन्होंने जवाब दिया था — 'यूरोपने अपना धर्म छोड़ दिया है। यहाँ भौतिकवादके दर्शन (फ़िलसफ़ा) ने जड़ जमा ली है। यूरोपके लोग सोचते हैं कि वे अीश्वरके बिना अपना हर काम कर सकते हैं। लेकिन अिस तरह वे अितनी ज़्यादा ग़लतियाँ करेंगे कि जल्दी ही अुनके समाजी, माली और सियासी जीवनमें घोर अुलट-पुलट हो जायगा।' और, अैसा ही हुआ भी। लोग सोचते हैं कि वे रोजानाकी ज़िन्दगीसे धर्मको अलग कर सकते हैं और दो अलग अलग ज़िन्दगियाँ बिता सकते हैं। यह नहीं हो सकता।"

गांधीजीने जवाब दिया — "बहुत लम्बे समयसे मेरी भी यही राय रही है।"

सबेरेके पहले घना अँधेरा

बादमें अेक दूसरे यूरोपियन दोस्त गांधीजीसे मिलने आये। वे सबसे पहले हिन्दुस्तानमें तब आये थे, जब गांधीजीने हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे दिल्लीमें २१ दिनका अुपवास किया था। अुन दोस्तने कहा — "अभी तक तो वह अुपवास सफल होता नहीं दिखाअी देता, लेकिन अुसका कोअी नतीजा तो होना ही चाहिये। मालूम होता है, लोग आज अिस बुनियादी चीज़को भूल गये हैं कि आपसी समझौता और दोस्ती ही असल चीज़ है। आज हर हिन्दुस्तानीका ध्यान बँटवारेकी सीमाओंकी तरफ़ लगा हुआ है। लेकिन सच पूछा जाय, तो अुनका कोअी महत्व नहीं है।"

गांधीजीने अुनकी बात मंजूर की और कहा — "मैं अपनी शक्तिभर दोनों जातियोंको मिलानेकी कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन मैं अुस गोलीकी तरह हूँ, जिसमें निशाने तक पहुँचनेकी ताक़त और वेग नहीं रह गया है।"

मुलाकातीने गांधीजीकी अिस बातको नहीं माना। "आप तो सबसे बड़ी ताक़त हैं। आज भी आप हिन्दुस्तानके केन्द्र बने हुअे हैं। आप ही हमें बताअिये कि दोनों जातियोंको मिलानेके बारेमें क्या किया जा सकता है?" अुन्होंने पूछा।

गांधीजीका सादा और छोटासा जवाब था — "भगवानसे प्रार्थना कीजिये।"

यूरोपियन दोस्तने कहा — "लोगोंके दिलोंमें बदलेकी भावना बढ़ती जा रही है। यह बुरी बात है।"

गांधीजीने जवाब दिया — "मेरे खयालमें यह भावना हमेशा क़ायम नहीं रहेगी। अगर अिसने लोगोंमें हमेशाके लिअे जड़ जमा ली, तो अिसका मतलब होगा आज़ादीको सदाके लिअे नमस्कार! हिन्दुस्तान आत्म-हत्या करेगा।"

मुलाकातीने कहा — "बहुतसे हिन्दू यह समझते हैं कि पाकिस्तानको जो हिस्सा दे दिया गया है, अुसे वापिस लेना होगा। अिससे मुसलमान चिढ़ते हैं।"

गांधीजीने कहा — "मैं ख़ुद तो यह महसूस करता हूँ कि पाकिस्तानने जड़ जमा ली है।"

मुलाकातीने कहा — "अुसी बुनियादपर दोनों जातियोंमें दोस्ती मुमकिन हो सकती है।"

गांधीजीने कहा — "पाकिस्तान तो बन गया। लेकिन दोस्ती कैसे क़ायम की जा सकती है, यह मैं नहीं जानता।"

मुलाकातीने कहा — "चीज़ोंको बेहतर बननेके पहले बदतर बनना ही होता है। सबेरा होनेके पहले सबसे ज़्यादा अँधेरा होता है।"

नोआखाली

गांधीजीका मन हमेशा नोआखालीकी तरफ़ दौड़ता रहा है। अुनकी पार्टीके कुछ लोगोंने ज़्यादातर तन्दुरुस्ती बिगड़ जानेके कारण ही नोआखाली छोड़ दिया है। वहाँकी आबहवा, वहाँकी ख़ुराक, वहाँके दर्दनाक दृश्य, और भयानक कहानियाँ आदमीकी कड़ी परीक्षा करनेवाली होती हैं। श्री प्यारेलालजी और श्री कनु गांधी अुन लोगोंमेंसे हैं, जिन्होंने अभी तक नोआखाली नहीं छोड़ा है। वे वहाँ बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं। बीबी अमतुल सलाम भी, जो गांधीजीसे पहले नोआखाली गअी थीं, अभी तक वहीं हैं। अुन्होंने तन्दुरुस्तीके बहुत बिगड़ जानेपर भी नोआखाली छोड़नेसे अिन्कार कर दिया है। खादी प्रतिष्ठानके बहादुर कार्यकर्ता भी श्री सतीशबाबू और हेमप्रभादेवीके साथ वहीं काम कर रहे हैं। अन्तमें आज़ाद हिन्द फ़ौजके सिक्ख कार्यकर्ता सरदार जीवनसिंहजी भी अपनी जगह जम कर काम कर रहे हैं।

नोआखालीसे आनेवाली ख़बर अिस बातका भरोसा नहीं दिलाती कि वहाँकी दोनों जातियोंमें फिर मेल-मिलाप और भाअीचारा क़ायम हो गया है। अुसका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने प्रार्थना-सभामें कहा — "नोआखालीके हिन्दू घबरा रहे हैं। अुन्हें डर है कि जिस मुआवज़ेका वचन अुन्हें दिया गया है, वह शायद अुन्हें अब न मिले; या अुन लोगोंको मनमानी करनेके लिअे छोड़ दिया जाय जिन्हें अभी तक खून, लूट वग़ैराकी अदालती जाँच करनेके लिअे हवालातमें बन्द रखा गया है। मैं आशा करता हूँ कि हिन्दुओंका अैसा सारा डर बेबुनियाद और ग़ैर-मुनासिब है।"

श्री कनु गांधीको अेक पत्रमें गांधीजीने लिखा — "मेरा शरीर यहाँ है, लेकिन दिल तो नोआखालीमें है।" गांधीजी हिन्दुस्तानकी राजधानीमें बेचैन रहते हैं। अुन्हें लगता है कि अुनकी सच्ची जगह बिहार और नोआखालीमें है। लेकिन जहाँ तक बन पड़े वे अपने दोस्तोंकी मरज़ीके खिलाफ़ नहीं जाना चाहते। अपनी बातचीतमें अेक बार अुन्होंने कहा — "मैंने नोआखालीमें 'करने या मरने'का वचन दिया है। वहाँकी तसवीर दर्दनाक और निराशाजनक मालूम होती है। अैसा दिखाअी देता है कि मुझे नोआखालीमें मरना ही होगा।" अेक दोस्तने गांधीजीको याद दिलाया कि जब आपने अपनी पार्टीके मेम्बरोंको नोआखालीके अलग-अलग गाँवोंमें भेजा था, तब आपने कहा था कि अुन्हें ५ या ६ महीनेसे ज़्यादा बाहर नहीं रहना पड़ेगा। गांधीजीने कहा — "हाँ, मैंने यह ज़रूर कहा था। लेकिन मैं दक्षिण अफ्रीका १ बरसके लिअे गया और वहाँ २० बरस रहा था। चम्पारन मैं ३ दिनके लिअे गया था और वहाँ अेक बरस रहा। अनिश्चितताओंसे भरी यह ज़िन्दगी अैसी ही है।"

नअी दिल्ली, १०-७-'४७

(अंग्रेज़ीसे)

सुशीला नय्यर

अेजण्टोंसे

मेहरबानी करके नीचे लिखी बातोंपर ध्यान दें —

१. याद रखिये कि आपको हमारे यहाँ अपनी माँगके मुताबिक़ **दो महीनोंके** दाम पेशगी जमा कराने हैं। अिनमेंसे अेक महीनेकी रक़म यहाँ क़ायमी तौरपर जमा रहेगी, और बाक़ी चालू खातेमें जमा होगी। हर हफ़्ते भेजी जानेवाली कॉपियोंके दाम चालू खातेसे अुठाये जायँगे।

२. अेजण्ट आम तौरपर अमानतके पैसे चेकसे भेजते हैं। मेहरबानी करके ख़याल रखिये कि हम चेक नहीं लेते। चुनाँचे आप अपनी रक़म मनीऑर्डर, पोस्टल ऑर्डर या बैंक ड्राफ्टके ज़रिये ही भेजिये।

व्यवस्थापक

www.vinoba.in

रुद्रको अुभाड़ना

श्री सी० राजगोपालाचारीको प्रो० अेच० जे० भाभाकी सदारतमें अणु-शक्तिकी खोजके लिअे अेक कमेटी क़ायम करनेका श्रेय मिला है। अपने बयानमें अैसी अेक कमेटी क़ायम होनेकी बातका अैलान करते हुअे राजाजी विश्वास दिलाते हैं कि हिन्दुस्तानकी अणु-शक्तिको फ़िज़ूल खर्च या बरबाद नहीं होने दिया जायगा। वे आगे कहते हैं — "अणु-शक्तिसे ताल्लुक़ रखनेवाली खोजोंको सिर्फ़ बरबादीके कामोंसे जोड़ना ग़लत होगा।"

अणुकी खोज करना धनवान पच्छिमी मुल्कोंका अेक खर्चीला शौक़ है। अुन्होंने विनाशके देवता रुद्रको अुभाड़नेके लिअे या युद्धकी आग भड़कानेके लिअे करोड़ों रुपये खर्च किये हैं। हम अुसके लिअे कितना रुपया खर्च करनेके लिअे तैयार हैं? अगर अितना रुपया हमारे पास है, तो अिस भूखों मरते देशमें, जहाँ फ़ी अेकड़ ज़मीनकी उपज दुनिया भरमें सबसे कम है, हम अुसे पहले पशु-पालन और अनाजकी पैदावारके क्षेत्रोंमें खोज करनेपर क्यों न खर्च करें?

बेशक, अणु-शक्तिकी खोज सिर्फ़ बरबादीके लिअे ही नहीं है? मगर अिसके सिवा किसीने और किसी कामके लिअे अुसका अिस्तेमाल किया है? दोज़खको जानेवाला रास्ता अच्छे अिरादोंसे तैयार किया जाता है। यह कमेटी अुसके लिअे कहीं आम रास्ता तो साबित न हो?

हम मानते हैं कि अणु-शक्ति दुधारी तलवार हो सकती है, मगर अैसा हथियार चलानेके लिअे बहुत अूँचे दरजेके निज़ामकी ज़रूरत है। आग अेक अच्छी चीज़ है। सभ्यताके अुदयके दिनसे ही अुसने अिन्सानकी तरक़्क़ीके रास्तेको रौशन किया है। अिस दलीलपर क्या हम बच्चेके हाथमें जलती हुअी बत्ती देकर यह अुम्मीद कर सकते हैं कि वह घरको जलने नहीं देगा? आज, जहाँ कहीं हम नज़र घुमाते हैं, दुनिया भरमें हमें लालच, जलन और नफ़रत ही देखनेको मिलती है। क्या अैसी दुनिया यह हथियार सँभालनेके क़ाबिल है। कहीं वह भरे हुअे बारूदखानेमें चिनगारी साबित न हो? बेहतर है कि हम आगसे न खेलें।

न्यूज़ीलैंडसे अेक ज़्यादा खरी और सही रिपोर्ट आअी है। आकलैंड यूनिवर्सिटीकी फ़ैकल्टी ऑफ अिंजीनियरिंगके डीन प्रो० थॉमस लीचको अेटम बमके बदलेकी अेक चीज़ खोज निकालनेके लिअे कुछ दिनों पहले सम्मानित किया गया है। अमेरिकाके खुफ़िया विभागके भयसे खोजका केन्द्र फ्लॉरिडाके बजाय न्यूज़ीलैंडमें क़ायम किया गया था।

अुस खबरमें आगे साफ़ साफ़ कहा गया है कि "खोज करनेवालोंमेंसे बहुत थोड़े अपने कामके मक़सदको जानते हैं और आज भी ब्रिटेन, अमेरिका, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंडमें कुछ ही लोग जंगके अिस तरीक़ेका पूरी तरहसे अुपयोग कर सकते हैं।" अुस खबरमें यह भी बताया गया है कि "वहाँ काम करनेवाले साअिन्सदाँ लोगोंको हुक्म है कि वे अिससे ताल्लुक़ रखनेवाली हर बातमें हद दरजेकी पोशीदगी रखें।"

जहाँ तक हम सोचते हैं, हमें मंज़ूर करना चाहिये कि यह विश्वास कर लेनेके लिअे कि हम दूसरे मुल्कोंके लोगोंके समान नहीं बनेंगे, अभी तक हम अपने सार्वजनिक कामोंके अिन्तज़ाममें ज़रूरी निज़ाम नहीं पा सके हैं। ज्ञानके अिस दरख़्तको पा लेनेके बाद अमेरिकावालोंमें लालच अुनके क़ाबूके बाहर हो गया है। अिस बातकी हम क्या गारण्टी दे सकते हैं कि अणु बमका पहले पहल अिस्तेमाल करनेवाले अमेरिकनोंके बजाय हममें अपनेपर ज़्यादा क़ाबू और ज़्यादा निज़ाम है? जर्मनी और जापानकी जिस लूटके खिलाफ़ अिन पन्नोंमें हम पहले विरोध कर चुके हैं, अुसमें हिस्सा लेना अगर अुस सरकारकी नीतिकी अेक निशानी हो, जिसके श्री राजगोपालाचारी अेक नामी मेम्बर हैं, तब तो हवामें अुड़नेवाले तिनके हमें साफ़ बतला रहे हैं कि वह किस तरफ़ बढ़ रही है। हो सकता है कि हम सोचते हैं अुससे पहले ही रुद्रका आव्हान हो जाय, यानी महायुद्ध छिड़ जाय! मगर हमें अपनी सीमाअें जाननी चाहियें और अुसीके मुताबिक़ अपने प्रोग्राम तैयार करने चाहियें।

जब देश कअी क्षेत्रोंमें खोज करनेकी माँग कर रहा है, तब क्या अिस क़िस्मके कामको पहली जगह दी जानी चाहिये? क्या हम अपने थोड़ेसे साधनोंको ज़्यादा फ़ायदेमन्द कामोंमें नहीं लगा सकते?

(अंग्रेजीसे) **जे० सी० कुमारप्पा**

नये प्राण फूँकना

हमारे 'जहाज़को समतोल रखो' नामके लेखके जवाबमें मद्रास-सरकारकी स्थितिकी पूरी तसवीर देने, किसी तरहके भ्रमको दूर करने और डरको दूर करनेके लिअे मद्रासके सूचना और प्रचार महकमेके डाअिरेक्टरने हमारे पास नीचेकी जानकारी भेजी है —

"मद्रासके चार सरकार जिलोंमें प्रकाशम्-वजारतने अनाज पैदा करनेवालों और खानेवालोंकी जो सहकारी सोसायटियाँ शुरू की थीं और अुन्हें अनाज वसूल करनेका काम सौंपा था, वे अपनी जिम्मेदारी पूरी न कर सकीं। अिन जिलोंमें अनाज वसूल करनेका काम आगे न बढ़ सका। अिसका खास कारण यह था कि अिन सोसायटियोंके पास काफ़ी समय नहीं था और वे अुस मौसिम तक, जब कि अनाज वसूल करनेका काम पूरे जोशके साथ चलना चाहिये था, अनाज अिकट्ठा करनेवाले लोगोंका पूरा संगठन न कर सकीं। अिन सोसायटियोंके बचत अनाजवाले जिलोंसे अच्छी तरह अनाज वसूल न कर सकनेके कारण सूबेके कम अनाज पैदा करनेवाले जिलोंमें रेशनिंग-पद्धतिके पूरी तरह टूट जानेका भारी खतरा था। कम अनाज पैदा करनेवाले जिलोंमें अनाजकी तंगीका खतरा सामने होनेकी वजहसे सरकारको सोसायटियों द्वारा अनाज वसूल करानेका काम जारी रखने और ज़्यादा तेजीसे क़ामयाबी दिलानेका विश्वास पैदा करानेवाले ज़्यादा कारगर अिन्तज़ामके बीच चुनाव करना पड़ा। सिर्फ़ ज़रूरी समझकर ही अुसने दूसरा रास्ता लेनेका फ़ैसला किया। सरकारने अनाज पैदा करनेवालों और खानेवालोंकी सहकारी सोसायटियोंके हाथसे खरीफ़के मौसिम पुरता अनाज अिकट्ठा करनेका काम ले लेनेका अपना अिरादा ज़ाहिर किया और अिस बातपर जोर दिया कि 'सरकार अिन सोसायटियों द्वारा अिकट्ठी की गअी शेयरोंकी बड़ी रक़मको बरबादीसे बचाने और सोसायटियोंका अच्छे-से-अच्छा अुपयोग करनेके लिअे चिन्तित है। अिसके लिअे सरकारने जल्दी ही अेक खास कमेटी क़ायम कर दी है जो जाँच करके अिन सोसायटियोंको समाजके भलेके लिअे व्यवस्थित और संगठित करनेके सही तरीक़े खोजेगी।' अिस जाँच-कमेटीके बनानेका अिन्तज़ाम कर दिया गया है। मलाबारकी अच्छा काम करनेवाली सहकारी सोसायटियाँ अपनी जगहपर क़ायम रखी गअी हैं।

"अेस्टेट लैण्ड रेव्हेन्यू बिलके मामलेमें मौजूदा सरकारने सुधारका ज़्यादा कड़ा और कारगर क़दम अुठाया है। मौजूदा सरकार असेम्बलीमें जमीदारीको खत्म करनेका बिल पेश करने जा रही है, जब कि प्रकाशम्-बिल नअी बुनियादपर अिस्तमरारी बन्दोबस्तको ही क़ायम रखना चाहता था। आजकी ज़मीदारी रैयत नये बिलके जरिये रैयतवारी रैयत बन जायगी, और ज़मीन वग़ैराके सारे हक़ जमीदारोंके बजाय रैयतको मिल जाएँगे। नया बिल क़रीब-क़रीब तैयार हो चुका है और असेम्बलीके अगले सेशनमें ज़रूर पेश कर दिया जायगा। प्रकाशम्-बिलने जिन पूरे अिनामी गाँवोंको अपने दायरेसे बाहर रखना चाहा था, वे भी मौजूदा बिलमें शामिल कर लिये गये हैं। और, अिसे आन्ध्र प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीका और सारे रैयत-संघोंका समर्थन मिला हुआ है।

"सरकार सूबेकी सहकारी या कोऑपरेटिव हलचलको भी फिरसे संगठित करनेका विचार कर रही है, जिससे वह लोगोंकी माली हालतको सुधारनेका और खेती व गाँवोंकी माली व्यवस्थाको नअी ज़िन्दगी देनेका कारगर साधन बन सके।

"जो कुछ अूपर कहा गया है, अुससे यह साफ़ मालूम हो जाना चाहिये कि कुछ बातोंमें प्रकाशम्-वज़ारतके प्रोग्रामोंको कतअी छोड़ देनेके बजाय मौजूदा वज़ारत अुनमेंसे कुछ प्रोग्रामोंको नअी शकल, नया जीवन और नया अर्थ देनेकी कोशिश कर रही है। अगर प्रकाशम्-वज़ारतकी योजनाकी तफ़सीलोंमें कुछ सुधार और परिवर्तन किये गये हैं या किये जानेवाले हैं, तो अुसका मक़सद यही है कि अुनका मौजूदा हालतोंके साथ ठीक-ठीक मेल बैठाया जाय और अुन्हें आम जनताके भलेको बढ़ानेका ज़्यादा अच्छा साधन बनाया जाय।"

हमें यह जानकर बड़ी ख़ुशी होती है कि मद्रासकी मौजूदा वज़ारत अपने प्रोग्राममें नया जीवन डालनेके लिअे अुत्सुक है।

(अंग्रेजीसे) जे० सी० कुमारप्पा

हरिजनसेवक
२० जुलाअी १९४७

समाजवाद—२

समाजवादीको सत्य और अहिंसाकी मूर्ति होना चाहिये। और अिसके लिअे अीश्वरमें अुसकी जीती जागती श्रद्धा होनी चाहिये। सत्य और अहिंसाका मशीनकी तरह पालन करना कसौटीके वक़्त काम नहीं देता। अिसीलिअे मैंने कहा है कि सत्य ही परमेश्वर है।

यह परमेश्वर चेतनामय शक्ति है। जीव अिसी शक्तिसे बना हुआ है। यह (जीव) शरीरमें रहता है, मगर वह ख़ुद शरीर नहीं है। अिस महान् शक्तिके अस्तित्वसे अिन्कार करनेवाला शख़्स अपनेमें रहनेवाली अिस अखूट शक्तिसे महरूम रहकर अपंग बनता है। बेपतवारकी नावकी तरह वह अिधर-अुधर टकराता है और अखीरमें कहीं भी पहुँचे बिना बरबाद हो जाता है। यह हालत हममेंसे बहुतोंकी होती है। अैसे लोगोंका समाजवाद कहीं भी नहीं पहुँचता। करोड़ों अिन्सानों तक अुसके पहुँचनेकी तो बात ही दूर है?

यह सारी बात अगर सच हो तो क्या अीश्वरमें श्रद्धा रखनेवाला कोअी समाजवादी नहीं होगा? अगर हो, तो अुसने प्रगति क्यों नहीं की? अीश्वर-भक्त तो बहुतसे हो गये। अुन्होंने क्यों नहीं समाजवाद क़ायम किया?

अिन दो शंकाओंका सचोट जवाब देना मुश्किल है। फिर भी मैं मानता हूँ कि अीश्वरको माननेवाले समाजवादीको अैसा कभी नहीं लगा होगा कि समाजवादका आस्तिकतासे कोअी सीधा सम्बन्ध है। शायद अीश्वर-भक्तोंको समाजवादकी ज़रूरत ही न रही हो। अीश्वर-भक्तोंके मौजूद रहते हुअे भी दुनियामें वहम कहाँ नहीं देखनेमें आते? हिन्दू-धर्ममें अीश्वर-भक्त होते हुअे भी छुआछूत जैसे महान् कलंकने क्या समाजपर राज नहीं किया?

अीश्वर तत्त्व क्या है, अुसमें कितनी शक्ति छिपी हुअी है, यह हमेशा खोजका विषय रहा है।

मेरा दावा यह रहा है कि अिसी खोजमेंसे सत्याग्रहकी खोज हुअी है। यह नहीं कहा जा सकता कि सत्याग्रहसे ताल्लुक़ रखनेवाले सारे क़ायदे बन गये हैं। मैं यह भी नहीं कहता कि अिसके सारे क़ायदे मैं जानता हूँ। मगर अितना मैं दृढ़तासे कह सकता हूँ कि सत्याग्रहसे जो कुछ भी पाने जैसा है, वह सब पाया जा सकता है। सत्याग्रह बड़ेसे बड़ा साधन है, हथियार है। मेरी राय में समाजवाद तक पहुँचनेका अिसके सिवा दूसरा कोअी रास्ता नहीं है।

सत्याग्रहके ज़रिये समाजके सारे राजकीय, आर्थिक और नैतिक रोगोंको मिटाया जा सकता है।

नअी दिल्ली, १३-७-'४७

(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

संघर्ष

२५ जूनको गांधीजीने प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें कहा था, मैं कअी तरहके संघर्षोंके बीच पिस रहा हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि बिहार मुझे बुला रहा है। अुसी तरह नोआखाली भी मुझे बुला रहा है, जहाँ मैंने दंगेके शिकार हुअे निराश्रितोंके बीच अपना काम शुरू किया और अुसमें विशेष योग्यता पानेकी कोशिश की थी। जब अेक माह पहले मैंने पटना छोड़ा था, तब मेरा ख़याल था कि मैं अेक हफ़्तेके भीतर ही बिहार लौट जाअूँगा। लेकिन अुस महीनेमें घटनायें अितनी तेजीसे घटीं, मानों अेक पीढ़ीका समय अेक महीनेमें समा गया हो। अिसलिअे मैं अिस विचारसे दिल्लीमें ही जमा रहा कि यहाँ रहकर मैं बिहार और नोआखाली दोनोंकी सेवा कर रहा हूँ। तब मुझे ख़याल आया कि पंजाब भी मुझे बुला रहा है। लेकिन मुझे राह बतानेवाला कोअी अैसा तारा नहीं दिखाअी दिया जो मुझे बिना ग़लतीके यह बता दे कि मैं कौनसा रास्ता पकड़ूँ। अिसलिअे मैंने अुसी कहावतका सहारा लिया जिसने मुझे बरसों पहले अपने अधिकारमें कर लिया था—"जब तुम्हारे मनमें शक पैदा हो, तब तुम जहाँ हो वहीं जमे रहो।"

अेक बार मैंने सोचा कि और किसी जगह जानेसे पहले मैं अुत्तर-काशीकी यात्रा कर लूँ। स्व० महामना मालवीयजीने मुझे अुस पवित्र स्थान और वहाँके पवित्र साधु-सन्तोंका अुत्साह भरा वर्णन सुनाया था। अुनका आग्रह था कि वे किसी दिन मुझे अुत्तरकाशी ले जायँगे। मालवीयजीके जीते जी वह दिन कभी नहीं आया! लेकिन वे जहाँ कहीं भी होंगे, मेरी अिस तीर्थयात्रासे अुनकी आत्माको सचमुच बड़ा आनन्द होगा। मेरी अिस अिच्छाको सुनकर सेठ घनश्यामदास बिड़लाने मेरी अुत्तरकाशी तककी—लगभग पैदल—यात्राका सारा अिन्तज़ाम करनेका ज़िम्मा अपने सिर ले लिया। अिससे मेरी यात्राका लालच और बढ़ गया। लेकिन श्री मीरा बहनने, जो शान्तिकी खोजमें और हिमायलसे प्रेरणा पानेके लिअे अुत्तरकाशी गअी थीं, अेक पत्रमें लिखा कि सितंबर तक अुत्तरकाशीकी आबहवा मुझे ठीक नहीं पड़ेगी। अिसलिअे अभी तो मैंने अुत्तरकाशीकी यात्राका विचार छोड़ दिया है।

मेरी अुत्तरकाशीकी यात्राके बारेमें सुनकर लोगोंने यह अन्दाज़ लगाना शुरू कर दिया कि नेताओंसे मतभेद होनेके कारण मैं हिमालयमें जाकर रहना चाहता हूँ। नेताओंसे मेरा मतभेद ज़रूर है। मेरा रामराजका सपना पूरा होता नहीं दिखाअी देता। लेकिन मैंने अपनेमें अनासक्तिका गुण बहुत हद तक बढ़ा लिया है। आज मैं वही कर रहा हूँ जो हमेशासे करता आया हूँ—सबको सही रास्ता दिखाना और खुलेआम सत्यका अैलान करना, भले कोअी सुने या न सुने। नेताओंको जनताके प्रति अपना कर्तव्य निभाना होता है। यही लोकशाहीका क़ानून है। लोग जिस चीज़को नहीं चाहते, अुसे नेता अुनपर जबरन् लाद नहीं सकते। अिसलिअे आज़ाद हिन्दुस्तानकी जो तस्वीर आज बन रही है, वह हमारी कल्पनाकी तसवीरसे बहुत ज़्यादा फ़र्क रखती है। अिसका मुझे सबसे ज़्यादा दुःख है। मुझे अक्सर यह ताज्जुब होता है कि कहीं मैं पिछले तीस बरसोंमें देशको ग़लत रास्ते तो नहीं ले गया हूँ। यह तो मैं पहले ही क़बूल कर चुका हूँ कि हमारे लोगोंकी अहिंसा बहादुरोंकी अहिंसा नहीं थी, वर्ना अपने आपसी झगड़े तय करनेके लिअे अुन्होंने अहिंसाको छोड़कर हिंसाका सहारा न लिया होता।

आज सारी हवा हिंसासे भरी हुअी है। मेरी सारी कोशिशोंके बावजूद सद्भावना और दोस्तीके सामने, बढ़ती हुअी कड़ुवाहटके दबनेके कोअी आसार नहीं दिखाअी देते। अिसलिअे अब मैं यह कहने लगा हूँ कि हमारी अहिंसक लड़ाअी सिर्फ़ निष्क्रिय विरोध था, जो आगे आनेवाले हिंसक विरोधकी सूचना देनेवाला होता है।

www.vinoba.in

कमी मेरे मनमें यह सवाल अुठता है कि अगर हिन्दुस्तान शुरूसे ही हिंसक लड़ाअीकी तालीम लेता, तो क्या अुसके लिअे यह बेहतर नहीं होता? लेकिन अिसका जवाब है — 'नहीं'। तजरबेने यह दिखा दिया है कि कमज़ोरोंकी अहिंसा भी कितनी सफल हो सकती है। मुझे बहादुरोंकी अहिंसा पर अमल करके दिखाना है। अिसी दृष्टिसे मैंने नोआखालीमें करने या मरनेकी प्रतिज्ञा ली थी। मुझे अपना वचन पालना चाहिये। १२ जुलाअीकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने प्रार्थनामें गाये हुअे भजनका ज़िक्र किया, जिसमें कविने ताज्जुब जाहिर किया है कि मनुष्य भगवान और सत्यको भूलकर अपने गुस्सा, लालच वग़ैरा ६ कट्टर दुश्मनोंसे क्यों चिपटा रहता है। अिसके बाद अुन्होंने सभाके लोगोंको नोआखालीमें करने या मरनेके अपने वचनकी याद दिलाअी और कहा, मैंने कहा था कि जब तक हिन्दू और मुसलमान मुझे अिस बातका भरोसा नहीं दिलाते कि मैं हिन्दुओंकी अिज्ज़त, ज़िन्दगी और जायदादकी जरा भी चिन्ता किये बिना नोआखालीसे जा सकता हूँ, तब तक मैं नोआखाली नहीं छोड़ूँगा। लेकिन अैसी कामयाबी पानेवाला मैं कौन होता हूँ? मैं तो सिर्फ़ भगवानका सेवक हूँ। अगर भगवान चाहेगा, तो वह मुझसे यह सेवा लेगा। अगर भगवान अैसा नहीं करता, तो मैं नोआखालीमें अपना काम करके या मरकर ही सन्तोष मानूँगा। मैं नोआखालीके लोगोंके बीच रहूँगा और मुझसे जैसी बन पड़ेगी वैसी अुनकी सेवा करूँगा। मेरे दोस्त मुझसे कहते हैं कि 'आप नोआखालीको अितना महत्व क्यों देते हैं? आखिर सारे हिन्दुस्तानके मुक़ाबले नोआखाली किस गिनतीमें है? नोआखालीको ही अपनी सेवाका दायरा बनानेके बजाय सारे हिन्दुस्तानकी सेवामें आप अपनी बुद्धि क्यों नहीं लगाते? अगर हिन्दुस्तानकी हालत ठीक हो जायगी, तो नोआखालीकी हालत अपने-आप सुधर जायगी।' लेकिन मैं दूसरी ही तरहका आदमी हूँ। मेरी माँने, जो गाँवकी अनपढ़ स्त्री थी, मुझे सिखाया था — यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे। यानी अणुमें विश्वकी परछाअी दिखाअी देती है। अुन्होंने मुझे सिखाया था कि 'तुझे हमेशा सही काम करनेका ध्यान रखना चाहिये।' मेरा विश्व मेरे आसपासका वातावरण है। अगर मैं अपने आसपासके लोगोंकी सेवा करता हूँ, तो विश्व अपनी सँभाल खुद कर लेगा।

नोआखालीसे अेक दोस्तने मुझे लिखा है कि 'अगर आप १५ अगस्त तक नहीं लौटे, तो शायद आपको पछताना पड़ेगा'। १५ अगस्त हिन्दुस्तानके बँटवारेकी और ब्रिटिश सरकारके हाथसे हिन्दुस्तानियोंको हुकूमत सौंपनेकी आखिरी तारीख है। सच पूछा जाय तो हिन्दुस्तानके बँटवारेकी योजना पहले ही तय हो चुकी है। लेकिन भगवान अिन्सानोंकी योजनाको अुलट-पुलट भी कर सकता है। निश्चित दिनके पहले भूकंप सारे हिन्दुस्तानको तबाह कर सकता है। संभव है, विदेशी हमला ही अिन्सानकी लुभावनी और छोटी-छोटी योजनाओंको खत्म कर दे।

लेकिन अिन्सानी तौरपर कहा जाय तो १५ अगस्तके दिन पाकिस्तान क़ानूनन् क़ायम हो जायगा। मैंने बिहार जानेके लिअे नोआखाली छोड़ा था। वहाँके मुसलमान भाअियोंकी मैंने बहुत सेवा की है। नोआखालीके बनिबस्त बिहारमें मरनेवालोंकी तादाद बहुत ज्यादा थी। बिहारमें लगभग १०,००० लोग मारे गये, जब कि नोआखालीमें ५०० से भी कम मारे गये। जब बिहारने पुकारा, तब मैं वहाँ गया। अिसलिअे नोआखाली जाते हुअे बिहार जाना मेरा फ़र्ज़ होगा। मैं वहाँ जल्दीसे जल्दी पहुँचना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि दिल्लीको मेरी ज़रूरत नहीं है। लेकिन बिहार और नोआखालीको मेरी ज़रूरत है। वहीं मेरी असल जगह है। आप सब भगवानसे प्रार्थना करें कि वह मुझे जल्दी ही नोआखाली जाकर अपना वचन पूरा करनेकी शक्ति दे।

नअी दिल्ली, १२-७-'४७ सुशीला नय्यर

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

राजकोट राष्ट्रीय शाला — ७९वीं गांधी जयंती

भादों वदी बारस — चरखा बारस

(ता. २६-७-'४७से ११-१०-'४७ तक)

भादों वदी बारसके रोज़ पूज्य श्री गांधीजीकी ७९वीं बरसगाँठ पड़ती है। गांधी जयंती याने चरखा जयन्ती।

अिस संस्थामें १३ बरससे चरखा जयन्ती मनाअी जाती है। अिसके अनुसार अिस वर्ष भी ७८ दिनोंका कातनेका कार्यक्रम रखा गया है। अहिंसक समाज-रचनामें गांधीजीने चरखेको अहिंसाका प्रतीक कहा है। अुन्होंने चरखेको राजकीय, आर्थिक और सामाजिक आज़ादीका सबसे अच्छा साधन माना है। मगर यह बात दीपककी तरह साफ़ है कि करोड़ोंने अुसे नहीं अपनाया। अगर देशने चरखेको अहिंसाका प्रतीक मानकर अपनाया होता, तो आजकी दर्दनाक हालत खड़ी ही न होती।

आजके वातावरणमें चरखा-प्रेमी क्या करे? धर्म तो सिखाता है कि जब आसपासकी हवा विरोधी हो, तब श्रद्धालुकी श्रद्धा ज्यादा तेजस्वी बनती है। अैसे श्रद्धालु लोग कितने होंगे?

अिस सालका कार्यक्रम २६ जुलाअीको साढ़े सात बजे सबेरे प्रार्थनासे शुरू होगा। सब कोअी ७८ दिनों तक अपनी पूरी ताक़तसे कातनेका संकल्प करें। चरखा-संघके मेम्बर, रचनात्मक काम करनेवाले, और सरकारी ओहदोंपर स्थित कांग्रेसके कार्यकर्ता, सब कातनेका संकल्प करके समाजको प्रेरणा दें। कातनेका संकल्प करनेवालोंसे बिनती है कि वे पहलेसे अिसकी खबर हमारे पास भेज दें। ये सब लोग चरखेका महान् अर्थ समझकर कातें।

हर सालकी तरह सिक्के दान करनेवाले ७८ सिक्के भेजें। मगर दानमें गांधीजी सूतके दानको सबसे अच्छा मानते हैं।

हमें अुम्मीद है कि चरखा जयन्तीके दिन सूत स्वीकार करनेके लिअे हमेशाकी तरह कोअी महान् व्यक्ति पधारेंगे।

राष्ट्रीय शाला, राजकोट,
९-७-'४७ नारणदास खु. गांधी

[आनेवाली चरखा जयन्तीके बारेमें चरखा-प्रेमियोंका अुत्साह पहलेसे सौ गुना ज्यादा होना चाहिये। अिसका यह मतलब नहीं कि वे सौगुना सूत भेजें। वे चाहें, तो भले अितना सूत भेजें। लेकिन अगर वे सत्य और अहिंसाका पालन न करते हों, अीश्वरका ध्यान न धरते हों, तो बिलकुल सूत न भेजें। अिसका मतलब यह हुआ कि जो अिस यज्ञके लिअे कातेंगे, वे सत्य और अहिंसाका पालन करनेवाले होंगे। वे मानते होंगे कि अीश्वर ही सबका बेली है और सच्चा स्वराज सत्य और अहिंसाके जरिये ही मिल सकता है। जो लोग अैसा नहीं मानते, वे अिस सूत-यज्ञमें भाग न लें, यही ठीक होगा।

नअी दिल्ली, १२-७-'४७ मो० क० गांधी]

(गुजरातीसे)

हाथ-बनी शकर

केन्द्रीय सरकारका सन् १९४३का 'शुगर अेन्ड शुगर प्रॉडक्ट्स कंट्रोल ऑर्डर' (शकर और शकरकी पैदावारपर नियंत्रण रखनेका हुक्म) खांडसारी और देशी चीनीकी पैदावारको बरबाद कर रहा है — खासकर यू० पी० में। अब हमें हिन्द-सरकारके खुराक-विभागसे यह सूचना मिली है कि नोटिस नं० २० — धारा-(३२)/४६में हाथ-बनी शकर शामिल नहीं है। वह सिर्फ़ मिलोंमें बननेवाली शकरपर ही लागू होता है। सूचनामें यह भी कहा गया है कि केन्द्रीय सरकारने ताड़ या खजूरके रसकी हाथ-बनी शकरपर कोअी पाबन्दी नहीं लगाअी है। हमें विश्वास है कि सूबा-सरकारें भी अिसके अनुसार काम करेंगी।

(अंग्रेजीसे) जे० सी० कु०

गांधीजीके भाषणोंसे

[यहाँ गांधीजीके भाषणोंसे ज़रूरतके मुताबिक़ मुख़्तसर किये हुअे हिस्से दिये जाते हैं सु० न०]

समस्याका हल

पिछली शामको मैंने बतलाया था कि आनेवाली आज़ादीसे लोगोंमें कोअी अुत्साह क्यों नहीं नज़र आता। आज मैं बतलाअूँगा कि अगर हम चाहें, तो किस तरह अिस मुसीबतको वरदानके रूपमें बदल सकते हैं। भूतकालपर सोचते रहने या अिस-अुस पार्टीको दोष देते रहनेसे हमें कोअी फ़ायदा न होगा। क़ानूनी तौरपर आज़ादी मिलनेमें अभी कुछ दिन बाक़ी हैं। असलमें चूँकि सभी पार्टियोंने अेक साथ अिस स्थितिको मंजूर कर लिया है, अिसलिअे हमारे लिअे वापस जानेका कोअी रास्ता नहीं रह गया। जिस कामके करनेमें अिन्सान अेकराय हैं, अुसे अुलट देनेकी ताक़त अेक अीश्वरमें ही है, जिसकी तह तक पहुँचना अिन्सानकी शक्तिसे बाहर है।

अेक आसान और तैयार तरीक़ा यह है कि कांग्रेस और लीग मिलें और वाअिसरायके बीचमें पड़े बग़ैर आपसमें समझौता करलें। अिसमें लीगको पहला क़दम अुठाना है। मेरा यह सुझाव बिलकुल भी नहीं है कि पाकिस्तान खतम कर दिया जाय। अुसे तो बिना वाद-विवाद और झगड़ेके अेक स्थापित सत्य मान लिया जाय। मगर वे अितना तो कर ही सकते हैं कि दोनों पक्षोंके ज़्यादासे ज़्यादा १० प्रतिनिधियोंकी गुंजाअिशवाली अेक मिट्टीकी झोंपड़ीमें वे बैठ जायँ और तय करलें कि जब तक समझौता नहीं हो जायगा, तब तक वहाँसे बाहर नहीं निकलेंगे। मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि अगर अैसा किया जाय, तो अेकसे ही दरजेके दो अलग अलग राज्योंमें हिन्दुस्तानके टुकड़े करके अुसे आज़ाद ज़ाहिर करनेवाले अिस बिलके बजाय यह लाख गुनी अच्छी बात होगी।

आज लाचार बने हुअे हिन्दुस्तानियोंके सामने जो कुछ हो रहा है, अुससे न हिन्दू सुखी हैं, न मुसलमान। जो हिन्दू और मुसलमान मुझसे रोज़ाना मिलते हैं या मुझसे खतो-किताबत करते हैं, वे अगर मुझको धोखा न दे रहे हों, तो अिसे आँखों-देखा सबूत कहा जा सकता है। किन्तु — यह अेक बहुत बड़ा किन्तु है — लोगोंको मैं असम्भवको सम्भव करनेकी कोशिश करता जान पड़ता हूँ। जब कि अंग्रेज़ बीचमें पड़कर अेक चाल खेल गये हैं, तब लीगसे यह अुम्मीद कैसे की जा सकती है कि वह अपने विरोधियोंके पास आकर भाअियों और दोस्तोंकी तरह आपसमें समझौता करले।

अिसके सिवा अेक दूसरा तरीक़ा भी है, जो क़रीब क़रीब अितना ही मुश्किल है। अेक अैसी फ़ौजसे जिसका अभी तक अेक और समान मक़सद रहा है — फिर वह मक़सद चाहे जो रहा हो — दो विरोधी फ़ौजें तैयार करना, हिन्दुस्तानके हरअेक प्रेमीको डरा देनेवाली चीज़ है। क्या ये दो सेनाअें अिसलिअे तैयार की जायेंगी कि वे समान खतरेका मुक़ाबला करने और अुससे लड़नेके बजाय अेक दूसरीको बरबाद कर दें और ताज्जुबमें पड़ी हुअी दुनियाके सामने यह दिखादें कि वे आपसमें अेक-दूसरीसे लड़कर अेक दूसरीकी जान लेनेके सिवा दूसरे किसी कामकी नहीं हैं?

मैंने भविष्यको अुसके भयंकर व नंगे रूपमें आपके सामने रख दिया है, ताकि हरअेक अुसे देखे और अुससे अलग रहे। अिससे बचनेका दूसरा तरीक़ा बेशक आकर्षक है। क्या वे बहुत बड़ी तादादके हिन्दू और वे लोग, जिन्होंने आज़ादीकी लड़ाअीमें अुनका साथ दिया है, अिस खतरेको अुसकी असली शकलमें पहचानेंगे और वक़्तकी ज़रूरतके मुताबिक़ ऊँचे अुठकर अब भी अिस बातकी कसम खावेंगे कि वे फौज रखेंगे ही नहीं, या कमसे कम अिस बातका निश्चय करेंगे कि वे हिन्दुस्तानी संघ या अुससे बाहर पाकिस्तानमें रहनेवाले अपने मुसलमान भाअियोंके खिलाफ़ कभी भी फ़ौजका अिस्तेमाल नहीं करेंगे?

यह प्रस्ताव हिन्दुओं और अुनके साथियोंको यह कहनेके लिअे रखा गया है कि वे अपनी तीस बरसोंकी कमज़ोरीको महान् सौंदर्यवाली ताक़तमें बदल डालें। शायद समस्याको अिस रूपमें रखना ही अुसकी बेहूदगीका प्रदर्शन करना है — मगर अभीतक अीश्वरके बारेमें यह कहा गया है कि वह अिन्सानकी बेवकूफ़ीको बुद्धिमानीमें बदल देता है: अुसकी भी अिस प्रस्तावमें सम्भावना मौजूद है। अुन सारी पार्टियोंकी भलाअीके लिअे, जिन्होंने फ़ौजको दो आत्मघाती जंगी कैम्पोंके रूपमें बाँटनेमें हिस्सा लिया है, यह कोशिश अमलमें लाने लायक़ है।

कभी ग़लती न करनेवाले अंग्रेज़

अिधर कुछ दिनोंसे गांधीजी अपनी प्रार्थना-सभाकी तक़रीरोंमें अुनसे पूछे गये सवालोंका जवाब दिया करते हैं। अुन्होंने दक्षिण हिन्दुस्तानके अेक भाअीका ज़िक्र किया, जिसने अपने खतमें गांधीजीसे कअी सवाल पूछे थे और अुनसे जवाब देनेकी प्रार्थना की थी।

चूँकि खत लिखनेवाले भाअी क़ौमी ज़बान हिन्दुस्तानी नहीं जानते थे और चूँकि अुन्होंने यह ठीक ही सोचा कि गांधीजीको तामिल पढ़नेमें दिक़्क़त हो सकती है, अिसलिअे अुन्होंने अंग्रेज़ीमें ही ये सवाल लिख भेजे।

"जार्ज बर्नार्ड शाने अेक जगह ताना दिया है कि "अंग्रेज़ कभी ग़लती नहीं करता। वह हर काम अुसूलके मुताबिक़ करता है। वह देश-भक्तिके अुसूलपर आपसे लड़ता है; व्यापारी अुसूलोंपर आपको लूटता है; साम्राजवादी अुसूलोंपर आपको गुलाम बनाता है; राजभक्तिके अुसूलोंपर अपने राजाका समर्थन करता है और प्रजातंत्रके अुसूलोंपर अपने राजाका सिर अुड़ा देता है।" मैं आपसे यह जाननेके लिअे अुत्सुक हूँ कि अिनमेंसे किस अुसूलपर अंग्रेज़ लोग अब हिन्दुस्तान छोड़ रहे हैं। क्या अंग्रेज़ हमारे प्यारे देशकी मौजूदा आर्थिक और राजनैतिक हालतको देखकर खुश है? क्या त्रावणकोर और हैदराबाद रियासतोंके हिन्दुस्तानी संघसे अलग रहनेमें अुसे सन्तोष है? मअी १९४६की योजनाको हटाकर अुसकी जगह यह "बँटवारेकी योजना" लाकर रखनेमें क्या अुसका कोअी निजी स्वार्थ है? क्या अुसे नोआखाली, बिहार और पंजाबकी भयंकर घटनाओंपर कुछ दुःख है — जिन घटनाओंने कांग्रेसको बँटवारेकी अिस योजनाको माननेके लिअे लाचार कर दिया है? मि० चर्चिल और अुनके साथियोंने अिस योजनाका जो समर्थन किया है, अुसके पीछे क्या कारण हो सकते हैं? आपने अक्सर कहा है कि आप अंग्रेज़ोंके दिमाग़को किसी भी हिन्दुस्तानीसे ज़्यादा अच्छी तरह समझते हैं और अपने प्रार्थना-सभाके भाषणोंमें हमें बारबार सलाह देते रहे हैं कि हमारे हाथमें सत्ता सौंपनेके काममें हम अंग्रेज़ोंके विश्वास, अीमानदारी और अच्छे अिरादोंपर भरोसा करें। अिसलिअे मुझे यक़ीन है कि आप अिन सारी बातोंको साफ़ साफ़ समझानेकी स्थितिमें होंगे। अेक आप ही अैसे हैं, जो हमारे शकोंको दूर करके हममें विश्वास पैदा करा सकते हैं।"

गांधीजीने अपने भाषणमें अिस बातको सिर्फ़ दूसरे शब्दोंमें समझा दिया। अुन्होंने कहा कि न तो बर्नार्ड शाका अंग्रेज़ोंपर किया हुआ ताना अपने आपमें पूर्ण है और न अंग्रेज़ोंकी सूझ-बूझ। अिसमें कोअी शक नहीं कि अंग्रेज़ अुसूल पर ही हिन्दुस्तान छोड़ रहा है। अिन्सानमें अपने आपको धोखा देनेकी ज़बर्दस्त चालाकी होती है। अंग्रेज़, अिन्सानोंमें सबसे बड़ा है। अुसे पता चल गया है कि हिन्दुस्तानको बन्धनमें रखना माली और सियासी नज़रसे बुरा है, अिसलिअे वह हिन्दुस्तान छोड़ रहा है। अिसमें वह बिलकुल अीमानदार है। अिस बातसे अिन्कार नहीं किया जा सकता कि अीमानदारी और अपने आपको धोखा देना अेक ही बात है। अंग्रेज़ने यह मानकर अपने आपको धोखा दिया है कि अगर अराजकता हिन्दुस्तानके पाले पड़ी, तो वह अुसे छोड़कर नहीं जा सकता। अिस देशको दो व्यवस्थित फ़ौजोंके लड़नेका अखाड़ा बनाकर जानेमें अुसे पूरा सन्तोष है। जानेसे पहले वह अेक फ़िरक़ेको दूसरे फ़िरक़ेके खिलाफ़ अुभाड़नेकी अपनी नीतिपर स्वीकृतिकी मोहर लगा

www.vinoba.in

रहा है। और जहाँ तक देशी रियासतोंका ताल्लुक़ है, अुसने अुचित रुख अख़्तियार करनेमें साहसकी कमी दिखाअी है। अुससे अुम्मीद है कि चूँकि हिन्दुस्तानकी अेक पार्टीकी मनचाही माँग पूरी हो गअी है, अिसलिअे वह १५ अगस्तको आखिरी बार हिन्दुस्तान छोड़नेसे पहले दोनों पार्टियोंको अेक दूसरेके नज़दीक ला सकेगा। अगर वह चाहे, तो अैसा कर सकता है। त्रावणकोर और हैदराबाद अभी आज़ाद राज नहीं बने हैं। मैं खुले आम स्वीकार करता हूँ कि अगर अंग्रेजने हिन्दुस्तानको अनिश्चित हालतमें छोड़ा और इंग्लैंडसे स्वतंत्र और अिसलिअे आपसमें अेक दूसरेसे स्वतंत्र रहनेवाले अैसे कअी राज हिन्दुस्तानमें छोड़े, जिनकी आपसमें लड़ते रहनेकी सम्भावना हो, तो मेरी समझमें ब्रिटेनके लिअे अिससे बड़े कलंककी और कोअी बात नहीं हो सकती। तब डोमिनियन स्टेटस अेक दुर्गन्धभरी चीज़ हो जायगी। मगर अभी मुझे अुम्मीद है कि १५ अगस्तसे पहले ब्रिटेन अपनी राजनीतिका दिवाला नहीं काढ़ देगा। तब तक अिन खत लिखनेवाले भाअीका अंग्रेजोंके मधुर और अुदार भाषावाले अैलानोंके बारेमें गहरा अविश्वास रहनेके बावजूद अुनके बारेमें मेरी राय जुदा रहेगी। अंग्रेजोंकी कही हुअी बातोंका सच्चा फ़ैसला अुनके काम ही करेंगे। जब तक किसी आदमीकी बातोंपर शक करनेके लिअे मेरे पास काफ़ी कारण न हों, तब तक मैं अुनपर भरोसा ही करूँगा। मि. चर्चिल व अुनके साथियोंने हिन्दुस्तान-आज़ादी-बिलका जो समर्थन किया है, अुससे साबित होता है कि अुन्होंने अिस कामकी माली और सियासी ज़रूरतोंको समझ लिया है; गो कि यह मंज़ूर करनेमें मुझे ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं है कि पिछले कुछ दिनोंसे अैसे लक्षण नज़र आ रहे हैं, जिनसे अंग्रेजोंकी नीयतपर शक पैदा हुअे बिना नहीं रहता। मगर मैं अपनी मौतके पहले मरनेमें विश्वास नहीं करता।

ज़हरको अमृत बना डालो

गांधीजीने पिछले दिन जिस खतपर चर्चा की थी, अुसीके दूसरे हिस्सेका अुन्होंने आज ज़िक्र किया। खत अिस तरह था:

"मेरा खयाल है कि सन् १९४०में आपने अपने अखबारमें लिखा था कि 'मुझे अपने आसपासके वातावरणमें हिंसाकी बास आती है।' तब अिस 'जीते जागते वर्तमान'के बारेमें आपको क्या कहना है? आज सारे राजतंत्रमें गरबड़ी मची हुअी है: घूँसखोरी अपनी बुरीसे बुरी और बेहद ज़हरीली शकलमें सब जगह अपूर्व राज कर रही है; बेशर्मीसे रुपया माँगा जाता है और लोग चुपकेसे दे भी देते हैं। लोग अपना काम बनानेमें यह नहीं देखते कि वे कैसे साधनोंका अिस्तेमाल कर रहे हैं; पैसेवाले अपनी जरूरतकी सारी चीज़ें बुरेसे बुरा तरीक़ा अख़्तियार करके भी हासिल कर लेते हैं। वातावरण हर तरहकी बुराअियोंसे भरा हुआ है: हिंसा, नफ़रत, कड़ुवाहट, अविश्वास, दुश्मनी, अनिश्चय वग़ैरा हवामें फैले हुअे हैं। अिन सबके अूपर ३ जून, १९४७ से हवामें बँटवारेकी बू फैली हुअी है। दैनिक अखबारोंमें हिन्दुस्तानके अलग अलग हिस्सोंमें होनेवाली हड़ताल, चोरी, लूटमार, आग लगाने, खून करने, छुरा भोंकने वग़ैराकी खबरें रोज़ाना पढ़नेको मिलती हैं। जिसके बारेमें आप जनताको लगातार अुपदेश देते रहे हैं, वह नफ़रतके बदले 'प्यार' करनेका बहादुरी भरा कानून' कहाँ है? और असत्यका बदला सत्यसे देने व असहिष्णुताके बदले सहिष्णुता बरतनेकी बातें कहाँ हैं? हमारे देशके अितिहासमें अिस दर्दनाक हालतको पैदा करनेके लिअे कौन ज़िम्मेदार है? क्या पिछले तीस बरसोंमें अूँचे-से-अूँचे नेताओंसे लेकर भंगी तकके कांग्रेसजनोंने जो कठिनाअियाँ और मुसीबतें सहीं और बड़े-बड़े त्याग किये, अुन सबका यही नतीजा है कि देशके टुकड़े कर दिये जायँ? क्या अमृत यानी 'पूर्ण स्वराज' पानेके पहले अूपर बताअी हुअी बुराअियोंका ज़हर फैलना ज़रूरी है, जिसका नतीजा हिन्दुस्तानके दो सियासी टुकड़े हैं? सारे हिन्दुस्तानमें सिर्फ़ आप ही अैसे आदमी हैं, जो अिस ज़हरको मार सकते हैं, और अिस तरह हमें 'पूर्ण स्वराज'का लाभ अुठाने लायक़ बना सकते हैं।"

गांधीजीने कहा, अिसमें कोअी शक नहीं कि आजकी तरह हमारे देशमें खून, आग, लूट-पाट वग़ैराका कभी बोलबाला नहीं रहा। मैंने यह कहकर देशकी दर्दनाक हालतके लिअे अपनेको ज़िम्मेदार मान लिया है कि मेरे नेतृत्वमें पिछले तीस सालमें जो कुछ किया गया, वह निष्क्रिय प्रतिरोधके सिवा कुछ नहीं था। वह ब्रिटिश हुकूमतसे हिन्दुस्तान छुड़ानेका कारण ज़रूर बन सका। लेकिन निष्क्रिय प्रतिरोधमें अहिंसाकी तरह लोगोंके दिलोंको बदलनेकी ताक़त नहीं होती। अुसका नतीजा हम अच्छी तरह जानते हैं। अुसपर और क्यादा ग़ौर करनेकी ज़रूरत नहीं है। हमारी कल्पनाका स्वराज तो कोसों दूर है। लेकिन अब ज़हरको अमृतमें बदलनेके लिअे क्या किया जाय? क्या अैसा करना मुमकिन है? मैं जानता हूँ कि यह मुमकिन है, और मुझे अिसका तरीक़ा भी मालूम है। लेकिन जो हिन्दुस्तान निष्क्रिय प्रतिरोधको अपनानेके लिअे तैयार था, वह अहिंसाके पाठको दिलमें बैठा लेनेकी ताक़त नहीं रखता। अहिंसा और शायद अकेली अहिंसा ही ज़हरको अमृतमें बदलनेकी शक्ति रखती है। बहुतसे लोग यह क़बूल करते हैं कि आजके चारों तरफ़ फैले हुअे ज़हरको अमृतमें बदलनेका अेकमात्र रास्ता अहिंसा ही है; लेकिन वे अिस सुनहले रास्तेको अपनानेकी हिम्मत नहीं रखते। मैं डंकेकी चोट यह कह सकता हूँ कि अहिंसा कभी असफल नहीं रही। लोग बेशक अहिंसाकी अूँचाअी तक नहीं पहुँच सके। मुझे लोगोंकी अिस टीकाकी कोअी परवाह नहीं कि मैं अहिंसाके प्रचारकी टेकनीक (तरीक़ा) नहीं जानता। मेरी टीका करनेवालोंने तो यहाँ तक भी कह डाला है कि खुद मुझमें ही अहिंसाका अभाव है। लेकिन सिर्फ़ भगवान ही मनुष्योंके दिलोंको जानता है। मैं पक्के विश्वासके साथ यह कह सकता हूँ कि अगर दुनियाको शान्ति पाना है, तो अुसका अेकमात्र साधन अहिंसा ही है।

खुशामद नहीं

अब चूँकि हिन्दुस्तानके दो टुकड़े हो गये हैं, अिसलिअे हमें सोचना चाहिये कि हम कैसा बरताव करें। बदक़िस्मतीसे आजकल हिन्दुओंका मुसलमानोंके साथ और मुसलमानोंका हिन्दुओंके साथ दुश्मनों जैसा बरताव करना फैशन बन गया है। लेकिन मैं अिस चीज़को नहीं मान सकता। मैं खुशामद करनेका भी समर्थन नहीं करता — आजकल 'अेपीज़मेण्ट' (समझाकर शान्त करना) शब्द बड़ा अप्रिय हो गया है। मुझसे पूछा गया है कि 'अगर आप खुशामद करके किसीको राजी करनेमें विश्वास नहीं रखते, तो आप १९४४में १८ दिनों तक जिन्ना साहबके घर क्यों जाते रहे?' लेकिन दोस्ताना बातचीत करनेका मतलब किसीको किसी तरह राजी करना नहीं है। दोस्त कभी अेक-दूसरेकी खुशामद नहीं करते। खुशामद दुश्मनोंके बीच ही मुमकिन है। स्व० हिटलरके बारेमें अैसा होनेका खयाल किया जाता था। अिंगलैण्ड और जर्मनी विरोधी ताक़तें थीं। स्व० चैम्बरलैनपर हिटलरकी खुशामद करने और अुसे राजी करनेकी नीति अपनानेका दोष लगाया गया था। मेरा तो दुनियामें कोअी दुश्मन नहीं है। जिन्ना साहबके पास मैं अपना धर्म समझकर गया था, अुनकी खुशामद करने नहीं। बेशक, मैंने जिन्ना साहबके सामने अैसी चीज़ पेश की थी, जिसपर मुझे आज भी गर्व है। अगर जिन्ना साहबने मेरी बात मान ली होती, तो वे पाकिस्तानी अिलाक़ेके स्वामी बन सकते थे। लेकिन तब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोस्त बने रहते और दोनोंके समान अधिकार होते। तब पाकिस्तान क़ायम हो जानेपर भी सारी दुनियाके सामने हिन्दुस्तान अेक बना रहता और यहाँ किसी तीसरी ताक़तकी हुकूमत न रहती। देशमें अितनी खूँरेज़ी, अितनी लूट-पाट नहीं मचती। आगसे अितनी बरबादी न हुअी होती। लेकिन अब दोनों जातियाँ अेक-दूसरीको बरबाद करनेपर तुली हुअी हैं। अिस अंगली हालतमें मुझे आज़ादीकी

www.vinoba.in

.खुशबू कहीं मालूम नहीं होती। अगर अगले ३५ दिनोंमें देशकी हालत नहीं बदली, हैवानियतकी जगह अिन्सानियतने नहीं ली, तो आनेवाली आज़ादी मुझमें अुत्साहका संचार नहीं कर सकती। मैं चाहता हूँ कि आप अपनेमें अूँचे-से-अूँचे किस्मकी बहादुरी बढ़ायें, जो हिंसासे हार मानकर तो कुछ भी न देगी, लेकिन सच्ची दोस्तीके सामने झुककर बहुत कुछ दे देगी — वह दोस्ती नहीं जो धोखेबाज़ीकी जगह अिस्तेमाल किया जानेवाला कोमल शब्द है।

हिन्दुस्तान सारे हिन्दुस्तानियोंका घर है

तब सवाल अुठता है कि पाकिस्तानमें रहनेवाले हिन्दू, सिक्ख और दूसरे ग़ैर-मुस्लिम क्या करें? मैं पंजाब और सरहदी सूबेके हिन्दुओं और सिक्खोंसे कहूँगा कि वे पाकिस्तानमें बुरे बरतावका डर रखकर भागते न फिरें। मैं अपने साथी मुसलमान देशवासियोंपर यह विश्वास करूँगा कि वे पाकिस्तानमें अपने साथ रहनेवाले हिन्दुओं, सिक्खों और दूसरे ग़ैर-मुस्लिमोंके साथ अेकसी अीमानदारी और अिन्सानियतका बरताव करेंगे। पाकिस्तानी अिलाकोंमें बहुतसे मंदिर और गुरुद्वारे हैं। क्या अुन्हें बरबाद कर दिया जायगा? क्या हिन्दुओं, सिक्खों और दूसरे लोगोंको अुन मंदिरों और गुरुद्वारोंमें जानेसे रोका जायगा? मैं खुद तो अपने मनमें अिस तरहका कोअी डर नहीं रखता। अिससे अुलटी मिसाल ली जाय, तो हिन्दुस्तानी संघमें दुनियाकी सबसे अुम्दा जामा मसजिद है। यहाँ ताजमहल है, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी है। क्या हिन्दुस्तानका बँटवारा हो जानेसे मुसलमान अिन और अिन्हीं जैसी दूसरी मशहूर जगहोंमें जाना छोड़ देंगे? मैं तो अैसा नहीं सोचता।

फिर अुन हिन्दुओंका सवाल है, जो सच्चे या झूठे डरके कारण पाकिस्तानके अपने घरोंमें नहीं रह सकते। अगर अुनके ब्योपार या रोजानाकी हलचलपर पाबन्दियाँ लगाअी गअीं और अपने ही सूबेमें अुनके साथ विदेशियों जैसा बरताव किया गया, तो वे पाकिस्तानमें नहीं रह सकते। बेशक, संघके सूबोंका यह फ़र्ज़ होगा कि वे पाकिस्तान छोड़कर आनेवाले अैसे लोगोंका खुले दिलसे स्वागत करें और अुन्हें हर तरहकी अुचित सुविधाअें दें। हमारा बरताव अुन्हें यह महसूस करा सके कि वे किसी अजनबी देशमें नहीं आये हैं। सारा हिन्दुस्तान हर अैसे हिन्दुस्तानीका घर है, जो अपनेको हिन्दुस्तानी मानता है और वैसा बरताव करता है। फिर वह किसी भी धर्मका क्यों न हो। लेकिन जैसा कि मैंने हरद्वारमें कहा था, हर नये आनेवालेके लिअे यह शर्त होगी कि वह दूधमें शक्करकी तरह हिन्दुस्तानमें घुलमिल जाय। अपने आसपासकी ज़िन्दगीको ज़्यादा मीठी और ज़्यादा अूँची बनानेका अुसका ध्येय होना चाहिये।

गवर्नर जनरलका चुनाव

गांधीजीने अपने कानों तक पहुँचनेवाली अुस टीकाका ज़िक्र किया जिसमें यह कहा गया था कि पाकिस्तानका गवर्नर जनरल तो जिन्ना साहबको बनाया गया, जब कि कांग्रेसके नेताओंने लार्ड माअुण्टबेटनको ही अपना गवर्नर जनरल बनाना स्वीकार कर लिया। अुस टीकामें यह भी अिशारा किया गया था कि कांग्रेसके नेता कमज़ोर हो गये हैं। लार्ड माअुण्टबेटनसे यहीं रहनेकी बात कहकर अुन्होंने यह दिखा दिया है कि वे आज भी अिंग्लैंडके आधीन हैं। गांधीजीने कहा, टीका करनेवालोंसे मेरा यह कहना है कि वे अिस तरहका शक मनसे निकाल दें। क्या वे पंडितजी या जन्मजात लड़ाका सरदार पटेलके बारेमें यह कल्पना कर सकते हैं कि वे कभी किसीके सामने झुकेंगे या किसीके तलुअे चाटेंगे? मैं आप लोगोंको यह बता देना चाहता हूँ कि १५ अगस्तके बाद आप किसीको भी अपना गवर्नर जनरल बना सकते हैं। अगर चुननेका काम मुझे सौंपा जाय, तो मैं अेक हरिजन लड़कीको भी हिन्दुस्तानी संघका गवर्नर जनरल चुन लूँ। लेकिन लार्ड माअुण्टबेटनकी नियुक्तिपर शक करनेसे अिन्कार करके मैं आपको धोखा नहीं देना चाहता। आखिरकार, अगर वे बेवफ़ा साबित हुअे, तो आप अुनसे हमेशा झगड़ तो सकते ही हैं। अब अखबारोंके जरिये यह मालूम हो चुका है कि पहले पहल हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनोंने लार्ड माअुण्टबेटनको ही अपना गवर्नर जनरल बनाना मंजूर कर लिया था। लेकिन अैन मौक़ेपर जिन्ना साहब बदल गये और अुन्होंने पाकिस्तानके गवर्नर जनरलके लिअे अपना नाम दे दिया। अिसपर कांग्रेसी नेता भी अैसा कर सकते थे, लेकिन अपने वचनसे मुकर जाना अुन्हें पसन्द न था। मुझे नहीं लगता कि अैसा करके अुन्होंने कोअी ग़लती की है। संघ-सरकारके क़ानूनी मुखिया होनेके बावजूद लार्ड माअुण्टबेटनकी अपने नये पद पर परीक्षा होगी। अुन्हें हिन्दुस्तानी संघके प्रति अपनेको अीमानदार और वफ़ादार साबित करना होगा। मुझे आशा है कि वे आपके सेवक बनकर कसौटीपर पूरी तरह खरे अुतरेंगे। जनताकी सेवाके लिअे ही अुन्हें गवर्नर जनरल बनाया गया है। लोगोंका यह सोचना मूर्खताकी बात होगी कि कोअी अंग्रेज़ न तो कभी हिन्दुस्तानका दोस्त बन सकता है और न अुसके प्रति वफ़ादार रह सकता है। अिसी तरह यह सोचना भी मूर्खता होगी कि लार्ड माअुण्टबेटन हिन्दुस्तानी यूनियनके सेवक बनकर नहीं रहेंगे, क्योंकि वे शाही खानदानके हैं, और क्योंकि अब अुनका भतीजा अिंग्लैण्डकी भावी रानीसे शादी करनेवाला है। आपको कभी किसीपर तब तक अविश्वास नहीं करना चाहिये, जब तक वह अपने-आपको धोखेबाज़ साबित न कर दे।

अिसी तरह मैं महसूस करता हूँ कि पाकिस्तानके गवर्नर जनरल बनकर जिन्ना साहबको भी कड़ी परीक्षा देनी होगी। अिसमें शक नहीं कि जिन्ना साहब गवर्नर जनरल बनकर दुनियाको दिखा देना चाहते हैं कि अुन्होंने पाकिस्तान ले लिया है। लेकिन जब तक वे महान् खलीफ़ाओंके क़दमोंपर नहीं चलते, तब तक पाकिस्तान लेनेसे कोअी फ़ायदा नहीं होगा। अुन्हें खलीफ़ा अुमरकी तरह बनना होगा, जिनके बारेमें यह कहा जाता है कि वे अपने लिअे कोअी चीज़ नहीं चाहते थे। अपनी प्रजाके हर आदमीके साथ पूरा पूरा न्याय करना ही अुनका अेक मक़सद था। अगर जिन्ना साहब काँटोंका ताज पहननेके अिरादेसे गवर्नर जनरल बनते हैं, यानी बादशाह बननेके बजाय हिन्दुस्तानके पहले सेवक बननेका अिरादा रखते हैं, तब तो वे पाकिस्तानको सबके रहने लायक़ बना देंगे। गवर्नर जनरलके पदसे न सिर्फ़ अुनकी, बल्कि अिस्लामकी भी परीक्षा होगी। मुझे आशा है कि जिन्ना साहब अिस परीक्षामें शानदार कामयाबी हासिल करेंगे।

नअी दिल्ली, १३-७-'४७
(अंग्रेजीसे)

ग्राहकोंको सूचना

जो ग्राहक किसी हफ़्तेके लिअे अपना पता बदलवाना चाहें, अुन्हें अिसकी सूचना हमारे पास मंगलवार तक भेज देनी चाहिये। सूचनाके साथ अपना ग्राहक नम्बर ज़रूर लिखें।

ग्राहकोंको यह सूचित किया जाता है कि अेक माहमें दो बार पता नहीं बदला जा सकता।

६ माहसे कमके लिअे किसीको ग्राहक नहीं बनाया जाता।

व्यवस्थापक

विषय-सूची

		पृष्ठ
फ़ौजें क्यों?	... अमृत कुँवर	२०१
रुद्रको अुभाड़ना	... जे० सी० कुमारप्पा	२०३
नये प्राण फूँकना	... जे० सी० कुमारप्पा	२०३
समाजवाद	... गांधीजी	२०४
संघर्ष	... सुशीला नय्यर	२०४
राजकोट राष्ट्रीय शाला — ७९ वीं गांधी जयंती	... नारणदास गांधी	२०५
गांधीजीके भाषणोंसे	... गांधीजी	२०६
टिप्पणी		
यूरोपका सवाल	... सुशीला नय्यर	२०१
सवेरेके पहले घना अँधेरा	... सुशीला नय्यर	२०२
नोआखाली	... सुशीला नय्यर	२०२
हाथ-बनी शक्कर	... जे० सी० कु०	२०५

www.vinoba.in